8/6/66 रात्रि क्लास :– उस सन्यास और तुम बच्चों के सन्यास में बहुत फर्क है। तुम बच्चे हो राजयोगी वा राजऋषि और वो भी हैं ऋषि; परन्तु वो हैं हठयोग ऋषि। उनका हठ मिथ्या है। बाप को ना जानने कारण ब्रह्म को ईश्वर कह देते हैं। यह मिथ्या हठ है। दूसरा, शरीर को बहुत तकलीफ देते हैं। प्राणायाम चढ़ाना, वो करना, हर बात में हठ है। तुम भी हो ऋषि; परन्तु राजऋषि हो। राजऋषि राजयोग सिखाते हैं। हठयोग सन्यासी हठ सिखाते हैं। राजयोग में राजा–रानी चाहिए। वो निवृत्तिमार्ग वाले राजयोग सिखा ना सके। ऋषि पवित्र को कहा जाता है। ऋषि पतित नहीं होते। हम पवित्र रहते हैं। कब विकार में नहीं गिरते। अगर गिरते हैं तो राजऋषि नहीं हैं। पवित्रता तो अच्छी है ना। देवताएँ पवित्र हैं तो माथा टेकते हैं। कन्या पवित्र है तो सब अपवित्र माथा टेकते हैं। पवित्रता अच्छी है। यह भी समझ में आता है। पवित्रता का अर्थ ही है विकार में ना जाना। देवताएँ भी विकार में नहीं जाते। सन्यासी भी नहीं जाते। तुम हो राजऋषि। बाप कहते हैं तुमको पवित्र बनना है। बच्चों को अंदर खुशी होनी चाहिए। उन ऋषियों से हम उत्तम हैं। वास्तव में माताएँ हैं राजऋषि। ऋषियों को जटाएँ होती हैं। सन्यासी ठोगे होते हैं। तुमको नैचरल जटाएँ हैं। अपन को शुद्ध अहंकार में रखना है। समझना चाहिए हम राजऋषि हैं। बाबा हमको पवित्र बनाते हैं। ऐसे नहीं कि कोई पवित्र दुनिया में जाए पवित्र बनेंगे। पवित्र बनने बिगर जा ना सके। यह संगमयुग है ही पवित्र बनने का। गाया जाता है पावन बनाने वाले आओ। यह एक ही समय है जो सब पावन बन जाते हैं। इसलिए कहते हैं– पतित–पावन आओ। आकर पावन बनाओ। अपन को ऋषि समझे तब जब पवित्र हो। पतित तो काम के नहीं। पतित कौड़ी तुल्य भी नहीं हैं। कोई काम के नहीं। मनुष्य देखने में भल जैन्टल मैन, फैशनेबुल आते हैं; परन्तु बुद्धि में ज्ञान है यह सब मिट्टी में मिल जाना है। इनका जीवन कुछ है नहीं। अमूल्य तुम्हारा यह जीवन है। पतित का कोई मूल्य नहीं है। संगम पर तुम पुरुषार्थ करते हो। इसलिए तुम(को) हीरे तुल्य कहा जाता। फिर 21 जन्म हीरे तुल्य बनते हो; परन्तु इनसे कम कहेंगे। यह जीवन बहुत दुर्लभ है। इस जन्म का बहुत कदर रखना है। इससे हम 21 जन्म का वर्सा लेंगे। शिवबाबा कहते हैं यह सब मेरे बच्चे हैं ना। मुझे सब पुट ही पुट हैं। (घी) नहीं है। ब्रह्मा को बहुत लड़की हैं। शिवबाबा को लड़के ही लड़के। सब आत्माएँ बाप से वर्सा लेने को हकदार हैं। कहते रहते हैं– बच्चों, बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो। वो बाप है सर्वशक्तिवान। सर्व आत्माओं से सर्वशक्तिवान। आत्मा को शक्ति अब मिलती है, फिर कम हो जाती है। सर्वशक्तिवान बाप को याद करो तो शक्ति का वर्सा मिलेगा। याद से ही वर्सा लेना है। तुम भी समझते हो हम शिवबाबा के सामने बैठे हैं। शिवबाबा इन आँखों से हमको देख सकते हैं। आत्मा ही देखती–सुनती–बोलती है। अब तुम आत्माएँ जानती हो बाबा भी शरीर में विराजमान है। वर्सा देने आए हैं और ... भी पावन बनाएँगे। तो ऊँच पद पावेंगे। आगे तीर्थों पर बहुत तकलीफ से जाते थे। अब बाप आए वर्सा देते हैं। तकलीफ कोई नहीं इस पढ़ाई में। उस पढ़ाई में बहुत खिटपिट है।

8/6/1966 4

कितने किताब होते हैं। यहाँ बुढ़ियों को कुछ लिखना–पढ़ना नहीं है। तुम कुछ नहीं जानते हो, बहुत अच्छा है। जो भी पढ़े हुए हो इस समय कोई काम के नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। राजयोग (जो) बाप सिखाते हैं वो शास्त्रों में नहीं है। तेल में ताकत नहीं, घी में ताकत होती है। भक्तिमार्ग में तेल, यह घी है। तुमको कितनी ताकत मिलती है। शक्तिवान बनते हो ना और हमेशा अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है और आत्माओं को वर्सा देने बाप ही आते हैं। बेहद का वर्सा स्वर्ग था। सबको सतोप्रधान बनाते हैं। सबको जीवनमुक्ति देते हैं। कोई भी बात में मूँझो तो छोड़ देना चाहिए। मूल बात है ही एक बाप को और सृष्टि–चक्र को जानना। जानते हो पतित बनने कारण बेड़ा गर्क हुआ है। विकारी मनुष्य कोई काम के नहीं हैं। तुम हो पावन, वो हैं पतित। आत्मा जानती हैं मैं पतित हूँ। आत्मा जानती है मैं विष्टा का कीड़ा हूँ। अपने ऊपर ..... आनी चाहिए। मूल बात है पावन बनने की। पतित को सभा में बैठने से भी बड़ा पाप पड़ता है। सभा में ऐसे समझो स्वच्छ सभा में कोई भंगी से भी बदतर बैठा है। दंड बहुत खाते हैं। सभा में ना आना बेहतर है। आने से और ही अपना अकल्याण करेंगे। बाबा का हुकुम मिला हुआ है पवित्र बनना है। पतित को डर रहना चाहिए आने से। नुकसान बहुत हो जाता है। हो सकता है सुनकर सुधर जाए (आइंदा) के लिए। प्रतिज्ञा करो। सो तो जब करे, नहीं तो दंड के भागी बन पड़ते हैं। अच्छा, गुडनाइट। ओम।